

E-Learning Study Material

BY- Prof (Dr) YADWENDRA SINGH

MAHARAJA COLLEGE, ARA

V K S UNIVERSITY, ARA, BIHAR

BA Economics Honors Second year
Third Paper ~~Third~~

Problems of Iron and Steel Industry
in India :-

भारतीय लौह एवं इस्पात उद्योग के समुचित विकास के लिए 'भारतीय इस्पात प्राधिकरण (SAIL)' की स्थापना 1973 में की गई। SAIL एक सरकारी उपक्रम है जो बिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला, बोकारो और बुमपुर में स्टील प्लांट तथा दुर्गापुर और लेलम स्टील प्लांट में मिश्र धातु ~~उद्योग~~ इस्पात संयंत्र के संबंध के लिए जिम्मेदार है। भारत सरकार ने भारतीय आपूर्ति एवं स्टील का संबंध 14 जुलाई 1976 को अपने हाथ में ले लिया और यह सरकारी नियंत्रण में चला गया। SAIL ने जनवरी 1986 में एक नई स्टील प्लांट महाराष्ट्र एलेक्ट्रोक्रोमेटल लिमिटेड का भी अधिग्रहण किया।

1991 में नई उदारवादी औद्योगिक नीति के कार्यान्वयन के पश्चात् SAIL के कार्यों काफी बदलाव के साथ इसके संचालन की लागत को नियंत्रित करने के तकनीकी उपाय किए गए।

Page-2

Production (in Million Tonnes)

Category - 2010-11 | 2011-12 | 2012-13 | 2013²⁰ | 14 | 15

Pig

Iron

S Ponge

Iron

Total Finished
Steel

(alloy + non-alloy) - 68.62 - 75.70 - 81.68 - 87.67 - 91.46

5.68 - 5.371 - 6.870 - 7.950 - 9.694

25.08 - 19.63 - 14.33 - 18.20 - 20.38

भारतीय लौह एवं इस्पात उद्योग की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं:-

1. पूँजी की कमी :- लौह एवं इस्पात उद्योग में बड़े मात्रा में पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है जिसे संभालना कला भाव्य है। विकासशील देश के लिए कठिन है। भारत में तार्किक क्षेत्र के कई एकीकृत इस्पात संयंत्र विदेशी पूँजी एवं तकनीक की कमी के कारण ही स्थापित किए गए हैं।

2. प्राथमिकी का अभाव :- 1960 के दशक तथा 1970 के प्रारंभ तक तेल संकट के कारण भारतीय इस्पात उद्योग को उच्च स्तर की तकनीकी दक्षता की विशेषता थी। यह तकनीक मुख्य रूप से विदेशों से प्राप्त की गयी थी लेकिन तेल संकट के बाद दो दशकों के दौरान उद्योगों की लागत में भारी वृद्धि एवं अन्य जातों की लागत में वृद्धि ने इस्पात संयंत्रों के लाभ को ~~अधिक~~ कम कर दिया। इसके परिणामस्वरूप तकनीकी विकास में निवेश का स्तर कम हुआ। इसके परिणामस्वरूप उद्योगों ने अपनी प्राथमिकी बढ़ाने ली है जो अब इतना दूर नहीं है जहाँ के पीछे भारत में भौतिक मूल्य उत्पादकता अभी भी बहुत कम है।

उत्पादन के उत्पादक माल में ^{उत्पादक} ~~उत्पाद~~ में सुधारा विशेष रूप से मरुतपवर्धित ~~उत्पादों~~ के लिए उत्पादों

जाने वाले वर्षों में अधिक महत्वपूर्ण होगा

3. उत्पादकता का कम होना - भारत में प्रति ००० मनुष्य उत्पादकता १०-१०० टन है जो दुनिया में सबसे कम है। जापान कोरिया और कुवैत अन्य प्रमुख उत्पादक देशों में मनुष्य उत्पादकता लगभग ६००-७०० टन प्रति ००० मनुष्य प्रति वर्ष है। अतः उत्पादकता में वृद्धि के लिए पुनर्विकास की आवश्यकता है।

4. तांत्रिक समाप्ति की आवश्यकता :- तांत्रिक क्षेत्र की अधिकांश समाप्ति अकुशल संबंधन क्षमता का कम प्रयोग, खराब मनुष्य संवर्धों आदि का भारी निवेश के कारण होते वाली अक्षमता से उत्पन्न है। अतः उत्पादकता में वृद्धि के लक्ष्यित मार्ग में बाधा आती है। तथा भारी नुकसान होता है।

5. संभावित उपयोग का कम होना :- जोड़ा एवं उत्पाद में संभावित उपयोग काफी कम है। उदाहरण के लिए दुर्गापुर उत्पादकता में अक्षमता का केवल ~~केवल~~ ५० प्रतिशत ही उपयोग का पाया है। यह ई.सी. बाल, गालाबन्दी, कच्चे माल की कमी, उर्जा संकट, अक्षम पश्चात्त आदि के परिणामस्वरूप प्रकृत होता है।

6. भारी माँग :- देश के जनसंख्या कम प्रतिफलित खपत पर पा प्रत्येक गुजरते दिन के लाख लोहे एवं स्टील की माँग बढ़ रही है जिसे पूरा करने के लिए आयात का जहाज लेना पड़ता है।

7. धातु कर्म कोपले की कमी :- उपलब्धता की दृष्टि से भारत में उच्च ग्रेड के लोहे अपेक्षा उनके कोपला भण्डार विशेष रूप से उच्च ग्रेड खाना पकाने के कोपले में गलत बाले ~~कोपले~~ लोहे के भण्डार है। कई स्टील प्लांट धातु कर्म कोपला आयात करने के लिए मजबूर है उदाहरण के लिए विशाखापत्तनम में स्टील प्लांट को आर्से लिखा ले कोपला आयातकरना पड़ता है।

8. उत्पादों की गुणवत्ता का निम्न श्रेणी का होना :- आधुनिक तकनीकी और पंजीगत आयातों की कमी और कमरे के बाजार दुर्बिजाओ के कारण उत्पादन काफी कम होता है। अतः इस प्रकार की स्थिति को सुधारने और देश को दृढ़ीकृत स्थिति में बाहर निकालने के लिए इस उत्पादों में आमूल-मूल परिवर्तन की आवश्यकता है।